मंज़ूर एहतेशाम के कथा-साहित्य में परिवर्तनकारी नेतृत्व

लेखक परिचय
नाम:- राज बहादुर गौतम, शिक्षा:- पीएचडी शोधार्थी,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा गुजरात ।
पिता का नाम :- काम्ता प्रसाद गौतम
पता:- घर संख्या-201 पाकेट - क्यू दिलशाद गार्डन दिल्ली-110095

भूमिका:-

नेतृत्व करना एक ऐसी कला है जो अपने आप में खास होती है तथा ये कला सामान्य व्यक्ति के अंदर नहीं पाई जाती। श्रेष्ठतम नेतृत्व करने वाला वही बन पाता है जो लोगों के दिलों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में सफलता प्राप्त करता है । उसका व्यक्तित्व ऐसा होता है जिसे प्रत्येक व्यक्ति स्वीकारता है तथा ऐसे व्यक्ति के साथ कार्य करने वाले व्यक्ति अपना सर्वस्व उस पर नियोछावर करने लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

मंज़ूर एहतेशाम जी ने ऐसे ही व्यक्तित्व वाले पात्रों को अपनी रचनाओं में समाहित किया है तथा इनके पात्र एक परिवर्तनकारी नेतृत्व के प्रतीत होते हैं जिसमें इनके प्रमुख एवं गौण सभी पात्र कहीं न कही परिवर्तनकारी नेतृत्व स्थापित करते हुए प्रतीत होते हैं।

'जेम्स मेक ग्रेओगर बनर्स' (१९७८) ने परिवर्तनकारी नेतृत्व के इस विषय कि पृष्ठभूमि को सर्वप्रथम अपने शब्दों में अपने शोध कार्य में बताते हुए यह कहा है कि राजनीतिक नेताओं में परिवर्तनकारी नेतृत्व का वर्णन करते हुए इन्होंने कहा है कि - " परिवर्तनकारी नेतृत्व एक ऐसा प्रक्रम है जिसमे नेता और अनुयायि एक दूसरे के लिए उच्च स्तर पर मदद सहायता करते हैं जिससे उनको मनोबल तथा प्रेरणा मिलती है।"१

इनके पश्चात् सन १९८५ ई. में न्यूयार्क के एक अन्य शोधार्थी ने नेतृत्व को दर्शाया है और यह कहा है कि " व्यावहारिक प्राचीन ज्ञान के लिए परिवर्तनकारी नेतृत्व होना आवश्यक है।"२ मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपनी रचनाओं में जिन पत्रों को समाहित किए हैं। उन पात्रों में नेतृत्व करने की कला साफ नजर आती है। कुछ गुणों के आधार पर इस विषय पर स्पष्टीकरण निम्न रूप से है:-

1} अनुशासन प्रिय होना:- एक नेतृत्व करता को स्वयं अनुशासित जीवन जीना चाहिए और समय पर हर कार्य को पूर्ण करना चाहिए। ऐसा होने पर ही उसके सहकर्मी और कर्मचारी अनुशासित रहेंगे और अपने निर्धारित कार्यों को समय पर पूरा करेंगे। इस परिवर्तनकारी नेतृत्व को मंज़ूर एहतेशाम की रचना में देखा जा सकता है जिसमे इनके पात्र अनुशासन प्रिय

प्रदर्शित होते हैं तथा इसके साथ साथ कुछ परिस्थितियों में अनुशासन के साथ में अपनी सफलताओं का उदाहरण भी देते हैं।

2} श्रमशीलता:- किसी भी रचना में पात्रों को श्रमशील होना चाहिए जिससे गौण पात्र शिक्षा लेकर कार्यों के प्रति श्रामशील बन सके और कर्म को पूजा में कर उसे शिदत्त से पूर्ण करे जिसे मंज़ूर एहतेशाम जी ने अपने साहित्य में इस परिवर्तनकारी नेतृत्व का समावेश पाठक को इनकी रचनाओं का अध्ययन करने से प्राप्त होता है जिस प्रकार इनकी कहानी का पात्र ' बशीर खां एक महनती और श्रम को पूजा मानने वाला व्यक्ति परिलक्षित हुआ है ये अपनी मालिक मॉडर्न केनिन आर्ट में पूरी शिद्दत से अपने कामों को सफलतापूर्वक करता है '३ ऐसे ही एहतेशाम जी की कहानियों के कई पात्र एक परिवर्तन करी नेतृत्व के अनुरूप अपना अभिनय करते हुए स्पष्ट रूप से नज़र आते हैं।

3} उत्तरदायी होना:- मंज़ूर एहतेशाम जी के पात्र अपने कार्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियां या उत्तरदायित्व को निभाते हैं तथा इनके पत्रों के अंदर गलतियों तथा असफलताओं के दायित्व को स्वीकार करने का साहस भी नज़र आता हैं। जिसके कारण से इनके पात्र एक परिवर्तनकारी पात्र नज़र आते हैं।

4} साहस:- मंज़ूर एहतेशाम जी के कथा - साहित्य के पात्र एक परिवर्तनकारी रूप में अपने साहस का परिचय देते हुए चुनौतियों को स्वीकार करते हैं और अपना पुरुषार्थ भी करते हैं। जिससे इनका आत्मविश्वास बढ़ता प्रतीत होता है और अपने साहस की वृद्धि करने के साथ - साथ समाज में एक परिवर्तनकारी बदलाव भी हमें देखने को मिलता है।

5} स्वनियंत्रण:- एक परिवर्तनशील नेतृत्व पात्र तभी एक सफल नेतृत्व कर सकता है जब वह खुद पर नियंत्रण रख सके जिससे उसका व्यवहार एक मर्यादा पूर्ण व्यवहार हो तथा अपने व्यवहार से वह समाज में परिवर्तन ला सके। एहतेशाम जी के ऐसे ही कई पात्र हैं जो अपने आप पर नियंत्रण रखकर परिवर्तनशील नेतृत्व करते हैं। इनकी रचना सूखा बरगद में रशीदा नाम की पात्र में यह भाव पाठक को देखने को मिल जाता है।

6} सही निर्णय लेने की क्षमता:- एहतेशाम जी परिवर्तनकारी पत्रों में सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता भी मिलती है जिससे इनके पात्र परिवर्तनशील प्रतीत होते हैं और वे पात्र अपने निर्णयों में बहुत ही सोच - समझकर दूरदर्शिता पर निर्णय लेते हुए दिखाई देते हैं।

7} स्पष्ट योजना :- एक परिवर्तनकारी नेतृत्व वाले व्यक्ति को स्पष्ट योजना का निर्माण करना आना चाहिए। एहतेशाम जी की रचनाओं के पात्र इस गुण की प्रतिपुष्टि करते हुए प्रतीत होते हैं। जिसकी वजह से इनके पात्रों में एक ऐसा गुण देखने को मिलता है जो कि एक सुस्पष्ट योजना का निर्माण करके हर कार्य को सफल बनाते हैं।

8} सहानुभूतिपूर्ण सोच:- एक परिवर्तनकारी वाले नेतृत्वकर्ता को एक सहानुभूतिपूर्ण भाव वाला होना चाहिए जिसकी सोच सहानुभूति से परिपूर्ण

हो और अपनी सोच में वो सकारात्मकता लिए हुए हो एहतेशाम जी के सूखा बरगद उपन्यास में भी इनकी मुख्य पात्र रशीदा है जिसके अंदर यह परिवर्तनकारी नेतृत्व भाव परिलक्षित होता है।

9} शालीन व्यवहार :- मंज़ूर एहतेशाम जी अपने पात्रों के भीतर शालीनता के भाव को समाहित करके अपनी रचनाएं करते चले आ रहे हैं। जो कि नूतनता में विश्वास रखते हैं तथा अपने हर पात्र को पाठक के समक्ष एक शालीन व्यवहार करता हुआ दर्शाते हैं। इनके सूखा बरगद में ही कई पात्र हैं जो कि परिवर्तनकारी हैं और शालीनता का भाव अपने अंदर संजोए हुए हैं एवम् इनके उपन्यास कुछ दिन और में पात्रों का शालीन व्यवहार इन पंक्तियों में साफ झलकता है - " पहले ज़रा मार्केट का थोड़ा कर्जा़ पट जाए, फिर तुम्हें दे देंगे । एक अच्छी बात है कि साला मान लेता है । कहने लगा – तुम कोई अलग हो ? कभी भी दे देना, दोस्ती.... ' "४

10} सहकारिता की प्रवृति :- एक नेतृत्व कर्ता या अर्थशास्त्र परिवर्तनशील नेतृत्व करने वाला हर कार्य को सहकर अर्थात् ' एक सबके लिए, सब एक के लिए' कि भावना से कार्य करता है तथा वो अपने सम्पूर्ण समूह की सफलता में ही अपनी सफलता को देखता है और उसी सफलता को अपनी सफलता भी मानता है।

11} अहम से दूरी :- एक परिवर्तनकारी नेतृत्व करने वाले के भीतर कोई कमजोरी गुणों के संबंध में किसी प्रकार कि ग्रंथि नहीं होनी चाहिए उसे अपने अहम को दूर रखकर यथार्थ को स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए जिससे हर कार्य को एक संगठन के रूप में सफल किया जा सके तथा प्रत्येक कार्य को बिना अहम के सफलतापूर्वक सफल बनाया जा सके। एहतेशाम जी अपनी रचनाओं के पत्रों में अहम की भावना को ना के समतुल्य ही रखते हैं इनकी कहानी ' चंदा '५ इसकी प्रतिपुष्टि का एक सफल उदहारण है। जिसमें मालिक के बच्चो के द्वारा नौकर चन्दा के साथ कोई भी भेदभाव नहीं किया जाता ।

12} संस्थान के लिए समर्पण भावना:- जो अधिकरी या जिसके हाथ में नेतृत्व की बागडोर होती है वह एक परिवर्तनकारी नेतृत्व वाला तभी बन सकता है जब वह अपनी संस्था के लिए समर्पित भाव रखें एवं जो भी नेतृत्व अधिकरी अपनी संस्था या परिवार के प्रति समर्पण भाव नहीं रखता तो वह एक सफल नेतृत्व करने वाला नहीं बन सकता। मंज़ूर एहतेशाम की कहानी की एक पात्र ' हलीमन ' इस समर्पण भाव की एक परिवर्तनकारी पात्र है।

13} जानकारी की पूर्णता :- एक सफल तथा परिवर्तनकारी नेतृत्व वाला पात्र वही होता है जिसे अपनी संस्था या परिवार का तथा उसके प्रत्येक कार्यों का उसे पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य होता है इसके आभाव में उसको उसके सहायकों द्वारा मूर्ख बनाने की संभावनाएं बढ़ जाती है। जिससे उसके नेतृत्व भाव में कमजोरी आ सकती है। एहतेशाम जी भी अपनी रचनाएं करते वक्त इस गुण का ध्यान रखकर अपनी रचनाओं का निर्माण करते हैं। इनकी सूखा बरगद उपन्यास की पात्र रशीदा की ये

पंक्तियां इस नेतृत्व का व्याख्यान हैं - "मैंने बहुत अदब के साथ उन लोगों से यही पूछा कि अगर वकालत के बारे में आपका यही नजरिया है तो फिर जिन्ना साहब इतने अच्छे कैसे हो गए ? आधे लोग तो सवाल सुनकर चुप हो गए और बाकी जो थे वह नाराज । अब उन बुजुर्गों को कौन समझाता कि झूठ की कमाई, इस्लाम में ही नहीं दुनिया के हर मजहब में हराम है । और मजहब को अगर छोड़ भी दिया जाए तो इंसानी नजरिए से झूठ बुरा है, सच अच्छा है। इसको समझने के लिए आसमानी किताबों की मदद लेना जरूरी नहीं- इंसान का जमीर काफी है। लेकिन जहां जमीर को जुजदानो मैं लपेटकर रख दिया गया हो और रिवायतों को मजहब का नाम मिल गया हो वहां हिंदू या मुसलमान को इंसान बनाना, नामुमकिन ना सही, खासा मुश्किल जरूर है।"६

14} संपर्कों से सुदृढ़ता:- इस गुण का समावेश एक परिवर्तनकारी नेतृत्वकर्ता को अपने व्यावसायिक या गैर व्यावसायिक क्षेत्रों से भी संपर्क रखना चाहिए और उनकी जरूरत के समय यथासंभव उनका सहयोग भी करना चाहिए ।इससे उसे भी अन्य लोगों का सहयोग प्राप्त होगा और एक सफल नेतृत्व कर्ता के संपर्क सूत्र इस तरह के होने चाहिए की वह अपने प्रत्येक कार्य को शीघ्र तथा आसानी से पूर्ण कर सके एवं एहतेशाम जी की रचनाओं में ऐसे परिवर्तनकारी नेतृत्व वाले पात्र हैं जिनका सम्पर्क सूत्र बहुत ही प्रबल प्रतीत होता है।

15} अनौपचारिक सम्बन्ध :- नेतृत्वकर्ता को अपने संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए अपने साथियों कि खुशियों का उत्सव मनाने और विपत्ति के समय उनके साथ में सहानुभूति व्यक्त करने से संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ती है। इसी से वह पात्र एक सफल एवं परिवर्तनकारी नेतृत्व वाला नेता बनता है। एहतेशाम जी ने यहां ' हालीमन ' के द्वारा इसकी बहुत ही स्पष्ट रूप में प्रतिपुष्टि की है। वह एक नौकरानी होते हुए अपने मालिक के घर में आई विपत्ति के दौरान उनकी समस्या को हल करने में उनका हाथ बंटाती है तथा अपना अनौपचारिक सम्बन्ध स्थापित करती है।

मंज़ूर एहतेशाम जी के पात्रों में कहीं ना कहीं ये सभी गुण किसी ना किसी रूप में परिलक्षित हो जाते हैं जिसके द्वारा इनके पात्र अपने आस पास के वातावरण एवम् उनसे संबंधित संस्था का विकास करते हुए प्रतीत होते हैं क्योंकि उपर्युक्त गुण जिस भी व्यक्ति के अंदर होंगे वो एक परिवर्तनकारी नेतृत्व वाला व्यक्तित्व रखता है जिससे वह अपनी संस्थाओं के साथ साथ अपने राज्य तथा अपने देश का भी विकास करता है ।

निष्कर्ष:-

अंततः हम यह कह सकते है कि नेतृत्व कुशलता एक ऐसी कला है, जिसके माध्यम से बहुत ही आसानी से बड़े - बड़े असम्भव कार्यों को भी सरलता के साथ सफल किया जा सकता है यदि किसी भी चीज का मार्गदर्शन ना किया जाए तो आगे के पथ में व्यक्ति का भटकना

समभाव है तथा किसी भी प्रकार की सफलता को प्राप्त करना सम्भव नहीं होता। बिना नेतृत्व के इकट्ठा हुई भीड़ से कुछ खास कार्य नहीं करवाया जा सकता, वहीं सही नेतृत्व से सेना की एक छोटी सी टुकड़ी के द्वारा भी बड़े से बड़े युद्ध को जीता जा सकता है और ऐसे ही नेतृत्व करने वाले व्यक्तित्व के व्यक्ति को एक परिवर्तनकारी नेतृत्व वाला कहा जाता है।

संदर्भ सूची :-

१:- बर्नस, जे. एम, [१९७८], leadership N.Y. Harper and Row.

२:- बेनार्ड एम. बांस, [१९८५], leadership and performance, N.Y Free Press.

३:- मंज़ूर एहतेशाम,कहानी 'बशीर खां, मालिक मॉडर्न केनिन आर्ट ', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

४:- मंज़ूर एहतेशाम [१९ ७६], कुछ दिन और उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

५:- मंज़ूर एहतेशाम,कहानी ' चन्दा ' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

६:- मंज़ूर एहतेशाम [१९८९], सूखा बरगद उपन्यास, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली।